विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2566, भाद्रपद पूर्णिमा, 10 सितंबर, 2022, वर्ष 52, अंक 3

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

वाचानुरक्खी मनसा सुसंवुतो, कायेन च नाकुसलं कयिरा।
एते तयो कम्मपथे विसोधये, आराधये मग्गमिसिप्पवेदितं॥

– धम्मपदपालि 281, मग्गवग्गो.

– वाणी को संयत रखे, मन को संयत रखे और शरीर से कोई अकुशल (काम) न करे। इन तीनों कर्मपथों (कर्मेंद्रियों) का विशोधन करे। ऋषि (बुद्ध) के बताये (अष्टांगिक) मार्ग का अनुसरण करे।

बाबूभैया को लिखे गये पत्रों के कुछ अंश

भारत के शिविरों के बारे में सयाजी ऊ बा खिन को अवगत कराने हेतु पूज्य गुरुजी द्वारा बाबू भैया (बड़े भाई श्री बाबूलाल) को पचास वर्ष पूर्व लिखे गये निम्नलिखित पत्र से स्पष्ट है कि उन दिनों के छोटे-बड़े सभी शिविरों का संचालन, कष्ट सहन करते हुए भी पूज्य गुरुजी ने जितनी समता के साथ किया, पारमी संपन्न साधकों का सहयोग भी उतना ही सहायक सिद्ध हुआ। विपरीत परिस्थितियों के बावजूद अंततः धर्म की विजय हुई, साधकों को प्रभूत लाभ मिला। बगहा (बिहार) के इस शिविर में कई तथ्य सामने आये। यहां पर पूज्य गुरुजी ने गुरु-ऋण से उऋण होने का जो उपाय सुझाया, उनकी 9वीं पुण्य-तिथि पर हम भी उसे अपनाने का संकल्प लें और जिस किसी प्रकार से भी धम्मदान के पुण्य कार्य में योगदान दे सकते हों, वैसा करके अधिक से अधिक लोगों को धर्मरस चख सकने में सहायक हो जायँ, तभी सही माने में गुरु-ऋण से मुक्त हो सकेंगे और तभी गुरुजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

– संपादक

गुरु-ऋण से उऋण होने का उपाय

पड़ाव: बगहा (बोधगया, बिहार),
12 दिसम्बर, 1970

बाबूभैया, सादर वंदे!

तपश्चर्या के लिए निकले हुए सिद्धार्थ गौतम, सम्यक संबोधि प्राप्त करने के पूर्व गया के आस-पास के क्षेत्रों में विभिन्न स्थानों में घूमते ही रहे होंगे। यहां इस निर्जन वन प्रदेश में बोधगया से 27 मील (लगभग 43 किमी.) दूर जिस पाठशाला (समन्वय विद्यापीठ, बगहा) में हमारा यह 23वां शिविर लगा है, उसके आसपास भी कभी न कभी उस तपोनिष्ठ श्रमण के पांव पड़े ही होंगे, ऐसी कल्पना सहज ही की जा सकती है। यह भी संभव है कि सम्यक संबोधि प्राप्त करने के बाद धर्मचारिका करते हुए भी इस क्षेत्र में से गुजरे हों अथवा यहीं कहीं विहार किया हो। शायद यही कारण है कि यहां के वायुमंडल में धर्म धातु की तरंगें आज भी प्रवहमान हैं। यहां का धर्म शिविर आज सायंकाल अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ और चित्त मोद से प्रफुल्लित हो उठा। अपने इस पुण्य मोद में सभी प्राणियों को सम्मिलित करते हुए मुझे पूज्य गुरुदेव का कृतज्ञतापूर्ण स्मरण हो आया और वह सुखद स्मरण अब तक भी मन में व्याप्त है। उन्हें अपने पुण्य का सर्वांश समर्पित करते हुए मन बार-बार इन भावों से उर्मिल हो रहा है :–

जय जय जय गुरुदेवजू, जय जय कृपानिधान।
धरम रतन ऐसा दिया, हुआ परम कल्याण॥

रोम रोम किरतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय।
दुखियन बांटूं धरम सुख, यह ही एक उपाय॥

सचमुच उनके इस महान ऋण से मैं कैसे उऋण हो सकता हूं। मुझे उनसे जो धर्म विभूति मिली है, उससे मैं कितना धनवान हो उठा हूं, कितना संपन्न हो उठा हूं। मेरे धन ऐश्वर्य की कहीं कोई सीमा नहीं रही। किस प्रकार उन्मुक्त हस्त से इस अनमोल धर्म रत्न की राशि-राशि दान किए जा रहा हूं और फिर भी संपन्नता घटने के बजाय बढ़ती ही जा रही है – ***धम्मदानं सब्बदानं जिनाति।***

बर्मा में रहते हुए स्कूल, अस्पताल, मंदिर, धर्मशाला, पुस्तकालय, वाचनालय आदि-आदि के लिए जो धनराशि 'सर्वजनहितार्थ' लगाई गई, वह हमारे लिए कुशल फलदायिनी ही होगी। परंतु इस समय पूज्य गुरुदेव के प्रतिनिधि के रूप में सारे परिवार की ओर से मैं इस अपरिमित धर्मराशि का जो दान संपादन कर रहा हूं उनका असीम सुखद परिणाम किसी मापदंड से मापा नहीं जा सकता। सारे परिवार का यह अहोभाग्य ही है। केवल मैं ही नहीं बल्कि सारा परिवार पूज्य गुरुदेव का ऋणी है।

कोई शिष्य गुरु-ऋण से कैसे मुक्त हो सकता है? 'मातृ-पितृ-गुरु' ये तीनों ही ऋण अपरिमित हैं। इनसे उऋण होना सहज नहीं। माता-पिता के ऋण से उऋण होने के लिए तो भगवान ने एक उपाय बताया कि यदि वे त्रिरत्न शरण नहीं हैं, तो उनको त्रिरत्न शरणागत बनने में सहायक हो जाएं। यदि वे शील संपन्न नहीं हैं, तो उन्हें शील संपन्न बनने में सहायक हो जाएं। यदि वे समाधि संपन्न नहीं हैं, तो उन्हें समाधि संपन्न बनने में सहायक हो जाएं। यदि वे प्रज्ञा संपन्न नहीं हैं, तो उन्हें प्रज्ञा संपन्न बनने में सहायक हो जाएं। यदि वे विमुक्ति रस का आस्वादन नहीं कर सके हैं, तो उन्हें विमुक्ति रस का आस्वादन करने में सहायक हो जाएं और इस प्रकार ही उनके ऋणों से मुक्त होंगे। परंतु गुरु तो त्रिरत्न शरण भी है, शील संपन्न भी है, समाधि संपन्न भी है, इसके अतिरिक्त प्रज्ञा संपन्न भी है,

और विमुक्ति संपन्न भी है तो उसके लिए और अधिक क्या करें, जिससे कि उसका ऋण उतर सके।

मुझे तो एक ही उपाय दिखता है जिस बोधि-चित्त से करुणा विगलित होकर गुरु, लोगों की कल्याण कामना करता है और अधिक से अधिक लोगों को धर्म की राह पर लगाकर उनका मंगल साधता है, उसके इस महान उद्देश्य की पूर्ति में यदि हम अपना हाथ बटाते हैं और उससे जो मंगल धर्म प्राप्त हुआ है उसे अधिक से अधिक लोगों में बांट कर उसका पुण्य-मोदन वर्धित करते हैं तो आंशिक रूप से उसके महान ऋण से उऋण होने लगते हैं। इस दिशा में थोड़ा-सा काम करके मेरा मन स्वभावतः धर्म प्रमोद से लहराने लगता है। अपने इस पुण्य प्रमोद में तुम्हारे साथ परिवार के सभी सदस्यों को भागीदार बनाता हूं तो अपना प्रमोद पुण्य ही बढ़ाता हूं। मैं इस महान पुण्य में पूज्य गुरुदेव और मां सयामा के साथ तुम्हें और सारे परिवार को ही नहीं, बल्कि आश्रम के समग्र साधक परिवार को पुण्य वितरित करते हुए प्रसन्नता से अभिभूत हो रहा हूं।

बाहर निरभ्र आकाश में पूर्णिमा का चांद प्रदीप्त हो रहा है। स्वच्छ गगन पटल पर बहुत कम तारे दिख रहे हैं, सर्वत्र चंद्रमा की ज्योत्सना (चांदनी) ही प्रफुल्ल्ता बिखेर रही है। चारों ओर के वातावरण में पुलक रोमांच भर उठा है। लगता है चारों ओर प्रकृति का कण-कण मोद मुदित हो उठा है। इसी का यदि व्यक्तीकरण किया जाय तो कह सकते हैं कि सारे आकाश में देव मंडली हर्ष विभोर हो उठी है। सबके मन में धर्म की विजय का आनंद फूट पड़ा है। ऐसी स्थिति में किसी का भी मन धर्म विभोर हुए बिना नहीं रह सकता।

यह शिविर बोधगया से 27 मील दूर एक निर्जन वन प्रदेश में लगा है। चारों ओर के निर्जन वन से लगभग 70 एकड़ वनस्थली किसी एक मठ के महंत ने समन्वय आश्रम के प्रधान श्री द्वारको सुंदरानी को दान दी थी ताकि वे उस जंगल को मंगल करते हुए वहां की पिछड़ी हुई गरीब जाति के लोगों के लिए सेवा का प्रबंध कर सकें। इस व्यक्ति ने लगभग 2 वर्ष पूर्व इस जमीन में उगे हुए जंगली झाड़-झंखाड़ों को कटवा कर भूमि साफ करवाई और वहां छोटे-छोटे 2-3 मकान बनवा कर उनमें आसपास के 50 गांवों से दो-दो गरीब बच्चे लेकर एक आश्रम और पाठशाला स्थापित की।

कुछ वर्ष पूर्व बिहार में जो लगातार 2 वर्षों तक गहन अकाल पड़ा तब बोधगया के समन्वय आश्रम ने बहुत बड़ी सेवा का काम किया था। दुनिया भर से भिन्न-भिन्न देशों के उदार व्यक्तियों और संस्थाओं ने इस आश्रम को पीड़ितों की सेवा के लिए बहुत धनराशि और सामग्री भेजी। बाहर के लोगों ने देखा कि यह एक ऐसी संस्था थी जिसके अधिकांश निःस्वार्थ कार्यकर्ताओं ने आदर्श सेवा की और महज इनकी सेवा पद्धति को देखने के लिए अनेक विदेशी यहां आने लगे। इस प्रकार बोधगया का समन्वय आश्रम अनेक विदेशियों का तीर्थ स्थान-सा बन गया और तब से अब तक हर वर्ष सैकड़ों की संख्या में सेवाभावी विदेशी यहां आते ही रहते हैं। उनमें से अनेक इनके यहां रहकर दिनों, महीनों तक अपना श्रमदान करते हैं। अनेक विदेशी संस्थाएं अपने युवा स्वयं-सेवकों को प्रशिक्षण के लिए यहां भेजती रहती हैं। जो विदेशी यहां आते हैं उनमें से कई यहां की गरीबी देखकर और इन गरीबों की हो रही सेवा देखकर, अपनी ओर से यथाशक्ति आर्थिक सहायता भी देते ही रहते हैं। अतः इस निर्जन जंगल में यह पाठशाला स्थापित करने में श्री द्वारको जी को किसी प्रकार का अर्थ संकोच नहीं हुआ। लेकिन केवल अर्थ से ही सारा काम नहीं हो जाता है, निःस्वार्थ सेवाभावी व्यक्तियों से ही ऐसी संस्थाओं का काम आगे चलता है। जहां सच्चा काम होता है वहां आर्थिक सहायता हाथ बांधे पीछे-पीछे आने ही लगती है।

हां, तो मैं कह रहा था कि बगहा नामक अरण्य स्थली की यह पाठशाला जहां एक ओर विदेशियों से आई हुई आर्थिक सहायता से निर्मित हुई, वहीं दूसरी ओर समन्वय आश्रम के कर्मठ कार्यकर्ताओं की निःस्वार्थ सेवा से, बल्कि पहले की बजाय दूसरे को ही अधिक महत्त्व मिलना चाहिए। जिस महंत ने यह निर्जन जंगल का टुकड़ा द्वारको जी को दान दिया उनके लिए इस भूमि का सालाना राज्य कर चुकाना भी भारी पड़ रहा था, क्योंकि इससे उन्हें कोई आय नहीं थी। वे कहते हैं कि यदि पैसों से ही सब कुछ हो जाता तो द्वारको जी को जो विदेशियों से सहायता मिली उससे कई गुना अधिक पूंजी मेरे कोष में है। परंतु मैं इस निर्जन कान्तार को नहीं बसा सका और न ही कभी बसा सकता था। इस कथन में पूर्ण सत्यता है।

आज यह 70 एकड़ भूमि काट कर साफ कर दी गई है। लगभग आधे हिस्से में खेती लहलहाने लगी है। फलों के अनेक पेड़ लगाए गए हैं जो कि चंद वर्षों में फलवान होंगे। पानी के लिए बड़े-बड़े जलाशय और कुएं खोदे गए, जिनसे खेती का काम चलता है। एक गहरा ट्यूबवेल बैठाए जाने का प्रबंध हो रहा है। एक आदर्श गोशाला स्थापित है। लेकिन इन सबसे बढ़कर बच्चों का यह आश्रम अरण्य निवास स्थान है, जिसमें आसपास के क्षेत्र से एक-एक गांव से प्रतिनिधि के रूप में दो-दो बच्चे लेकर पाले जा रहे हैं। इस उद्देश्य से कि बड़े होकर ये बच्चे अपने गांव में लौट कर स्वयं आदर्श जीवन बिता सकेंगे और अपने-अपने ग्रामवासियों का सफल मार्ग निर्देशन कर सकेंगे। इन सपनों के सफलीभूत होने की संभावना के लिए पूरी गुंजाइश है।

लगभग सब के सब बच्चे-बच्चियां समाज के निम्नतर स्तर के परिवार से लिए गए हैं, इनमें से अधिकतर ऐसे हैं, जिनके घरों में साल में 4-6 महीने तक अनाज के दर्शन नहीं होते, केवल जंगल के पेड़ की पत्तियां खाकर दिन काटे जाते हैं। इस कथन में कहीं कोई अतिशयोक्ति नहीं है। यह भारत का सबसे गरीब इलाका है और अब ये बच्चे इस आश्रम में जो जीवन बिता रहे हैं वह उनके लिए सर्वथा नूतन है। दिन भर में केवल 2 घंटे पढ़ाई होती है, बाकी सब समय बच्चे कोई न कोई काम करते रहते हैं। काम करना ही विद्या अध्ययन का प्रमुख अंग है।

यह भारत का बहुत बड़ा दुर्भाग्य रहा है कि यहां की शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को काम करने से दूर रखती रही है। श्रम को हीन समझा जाने लगा है, गुण नहीं। तभी तो घर में बिजली बिगड़ जाए तो घर का लड़का जो कॉलेज से इलेक्ट्रिकल इंजीनियर बनकर आया है, स्वयं बिजली नहीं सुधार सकता, यद्यपि उस पर एक शोध पत्र भले लिख दे। मैं कभी-कभी सोचता था कि हमारे समाज में यह जो दूषण आ गया है, इसका कारण विदेशी हुकूमत रही है। परंतु अब पिछले डेढ़ वर्षों में एक बात यह समझ में आई कि यह तो देश का राष्ट्रीय दूषण है। यहां हमेशा सैद्धांतिक पक्ष को ही सारा महत्त्व दिया जाता रहा और व्यावहारिक पक्ष शून्य रखने की ही आदत पड़ती गई। यद्यपि इस देश में तत्त्व ज्ञान को दर्शन कहा गया, जिसका अर्थ है साक्षात्कार करना। परंतु वस्तुतः स्वानुभूति द्वारा साक्षात्कार करने के बजाय सारा दर्शन बाल की खाल नोचता हुआ, सैद्धांतिक सूक्ष्मताओं में उलझ कर रह गया।

गीता की स्थितप्रज्ञता और अनासक्ति पर आज तक न जाने कितनी व्याख्याएं और टीकाएं लिखी गयी होंगी। अपने इस ऊंचे सिद्धांत के कारण ही यह दुनिया का बहुचर्चित ग्रंथ रहा है। परंतु व्यावहारिक दृष्टिकोण से

किस प्रकार स्थितप्रज्ञ और अनासक्त बन सकें इसके अभ्यास की किसी को कोई चिंता नहीं रही। बहुत हुआ तो ईश्वरीय कृपा पर आंख गड़ाकर बैठ गए। आज भी मेरा सामना अनेक ऐसे ही लोगों से होता रहता है जो केवल जानना चाहते हैं—मैं क्या सिखाता हूं? मेरा क्या सिद्धांत है? बस जान लिया तो समझ लिया कि हमें विषय का ज्ञान हो गया और जिसे ज्ञान हो गया, उसे मुक्ति मिल गई। बड़ी अजीब परिभाषा की गई है ज्ञान की। वह ज्ञान हमारे जीवन में उतरा है या नहीं, इसकी किसी को चिंता नहीं, पर उसकी जानकारी हो जाए तो मान लेते हैं- मकसद पूरा हो गया। अभिप्राय यह है कि लगभग सभी क्षेत्रों में व्यावहारिक पक्ष शून्य रहा और सैद्धांतिक पक्ष प्रबल रहा। अतः बच्चों की शिक्षा का अर्थ रहा, कुछ जान लेना, कुछ कर लेना नहीं। इस मनोवृति के विपरीत यह जो कर लेने की शिक्षा दी जा रही है, यह सचमुच सराहनीय है, क्योंकि यही काम की है।

समन्वय विद्यापीठ के साधकों की प्रगति

द्वारको भाई के मन में आया कि इन बच्चों की बुनियाद अध्यात्मपरक हो, इसीलिए उन्हें बचपन से ही अध्यात्म की बुनियादी शिक्षा देने का प्रयत्न किया। परंतु यह शिक्षा भी केवल सैद्धांतिक न होकर व्यावहारिक बने, इसी मकसद से यहां शिविर लगाने का उनका आग्रह था। किसी-किसी शिविर में दो-चार बच्चे लिए जाते हैं तो उनकी वजह से सभी साधकों को कठिनाई ही होती है, इसका अनुभव मैं कर चुका हूं। इसीलिए 10-10 वर्ष के 25 बच्चों को धर्म सिखाने का काम सचमुच मुझे बड़ा भारी लगा। मैं भी केवल मात्र एक नए अनुभव और अनुसंधान के दृष्टिकोण से ही इस कार्यक्रम के लिए तैयार हुआ और इसमें से गुजर कर देखा कि यह सचमुच मेरे लिए एक नया अनुभव ही था। सभी बच्चे बंदर के समान चंचल होते हैं अतः इनसे और क्या अपेक्षा की जा सकती थी। शांत स्थिर बैठ सकना इन बच्चों के स्वभाव के विरुद्ध था। चित्त एकाग्र करने का अभ्यास करना तो बहुत दूर की बात है। यदि कभी पूरे अथवा आधे दिन के लिए मौन व्रत दे दिया जाता तो मैं देखता कि उनका सारा शरीर वाचाल हो उठता। दिल्ली के शिविर में एक भिक्षु ने कहा था कि आप शिविर में इतने साधकों से अनवरत जूझते रहते हैं, फिर भी चिढ़ते नहीं, यही तो धर्म का वास्तविक स्वभाव है।

विदेशियों ने भी यही कहा कि हम आपके शिविरों में बार-बार इसलिए बैठते हैं कि हमें भी आप जैसी शांति का एक अंश प्राप्त हो सके। परंतु यहां आकर मैंने देखा कि ये बच्चे मेरी शांति की और सहिष्णुता की कड़ी परीक्षा लेंगे और सचमुच मुझे लगा कि मेरे लिए यह शिविर एक ट्रेनिंग शिविर ही रहा है। वैसे एक बार एक बच्चे को, और दूसरी बार दो बच्चों को बहुत बात करने के कारण समूह में से हटा कर एक ओर दीवाल की तरफ मुँह करके खड़े रहने का दंड देना पड़ा। परंतु उस समय भी मैं बार-बार यह चेक करते रहा कि मन में उनके प्रति करुणा-जन्य भाव है या नहीं। शायद इसी का प्रभाव था कि इतना ऊधम करने वाले बच्चे पांचवें दिन विपश्यना ले सके और प्रत्येक के शरीर में चैतन्य जागा और सब के सब एक-एक घंटे का अधिष्ठान बड़ी सरलता से करने लगे। किसी-किसी बच्चे को एक-दो बार भले साधारण-सा हिलना पड़ा हो। बच्चों की यह प्रगति देखकर जो 11 वयस्क थे उन्हें आश्चर्य हुआ और प्रेरणा भी प्राप्त हुई। बच्चों की ही तरह बड़ों को भी आश्चर्यजनक सफलता मिली। केवल एक जर्मन वृद्धा को छोड़कर, बाकी सब के सब साधना की सूक्ष्म अवस्था तक पहुँच गए।

भिक्षु महेंद्र दिल्ली के बाद वियतनामी भिक्षु के साथ यहां बोधगया आये और द्वारको जी के साथ उनकी यह वनस्थली वाली पाठशाला देखने गए तो जब तक शिविर न लगे वहीं रहने का आग्रह करने लगे। द्वारको जी ने यह निर्णय कर रखा था कि पाठशाला के शिविर में बाहर का कोई व्यक्ति नहीं लिया जायगा। परंतु इनके लिए अनुमति दे दी और इसलिए ये भिक्षु भी वहां के शिविर में बैठ सके। इस शिविर से इन्हें काफी लाभ हुआ। 8वें-9वें दिन जब अपूर्व शांति मिली तब कहने लगे, "सही माने में अब 25 वर्ष के भिक्षु जीवन का श्रामण्य फल प्राप्त हुआ है।" इनके मन में पूज्य गुरुदेव के प्रति बहुत बड़ी श्रद्धा है और बार-बार मुझे याद दिलाते रहते हैं कि मैं जब भी पत्र लिखूं, पूज्य गुरुदेव को इनका स्मरण अवश्य कराऊं, ताकि उनकी विशेष मैत्री भावना का लाभ प्राप्त कर सकें।

यहां कुछ अन्य वयस्क साधक सम्मिलित हुए, जिनमें से एक वहां की महिला अध्यापिका थी, शेष सभी पुरुष। पुरुषों में प्रमुख भाई श्री द्वारको जी ही हैं जो कि महात्मा गांधी के विचारों के अनुकूल उनकी मृत्यु के बाद श्री विनोबा भावे द्वारा आरंभ किए गए सर्वोदय समाज के अखिल भारतीय स्तर के महामंत्री हैं और बोधगया के समन्वय आश्रम के व्यवस्थापक हैं। भारत के सर्वोदयवादी कार्यकर्ताओं में इनका प्रमुख स्थान है।

पिछली बार बोधगया में जो शिविर लग सका वह इन्हीं के उत्साहपूर्ण सहयोग के कारण लगा। उसमें इनके आश्रम के तीन सहकारी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया था और अत्यंत संतुष्ट हुए थे। ये स्वयं भी पिछले कई महीनों से किसी शिविर में भाग लेने के लिए लालायित थे परंतु किसी न किसी अड़चन के कारण बैठ नहीं पा रहे थे। इस बार अपनी ही पाठशाला में सम्मिलित हो सके। मैंने अपने पिछले अनुभवों के आधार पर देखा है कि जब कोई व्यक्ति अपने स्थान पर ही शिविर लगाकर स्वयं सम्मिलित हो तो उसकी प्रगति बहुत मंद होती है। क्योंकि एक तो उसका ध्यान शिविर की व्यवस्था पर भी थोड़ा बहुत लगा ही रहता है और दूसरे वहां के वातावरण में वह इस कदर सम्मिश्रित रहता है कि अवचेतन मन को वहां की हजार बातें अनजाने खींचती रहती हैं। साधना के लिए 10 दिन का गृह निष्क्रमण अनिवार्य जैसा ही है। इस व्यक्ति को भी अपने घर शिविर लगाने के कारण कठिनाइयां हुईं। परंतु मुझे स्वयं यह देखकर आश्चर्य हुआ कि किस कदर लड़खड़ाते हुए भी यह व्यक्ति नौवें दिन धर्म गंगा में गहरी डुबकी लगाने लगा। इसी की तरह अन्य सभी वयस्कों ने भी कमोवेश भंग की स्थिति प्राप्त की। हां एक मुस्लिम लड़का सम्मिलित हुआ था जिसको मैंने वयस्कों में गिन लिया। परंतु वह केवल 15-16 वर्ष का किशोर था और अधिकतर बच्चों के ही बीच रहता था। उसे भी बच्चों की तरह उदय-व्यय का ही ज्ञान हुआ।

उन साधकों में सबसे तेज श्री सीतारामदास नाम का एक अध्यापक निकला, जो कि बच्चों को आसन प्राणायाम आदि सिखाता है और आश्रम का प्राकृतिक चिकित्सक भी है।

सबको इस शिविर की सफलता से गहरा संतोष हुआ। द्वारको जी ने इसमें अपने और अपनी संस्था के उद्देश्यों की आधार भूमि भी पाई और चरम परिणति भी। इस कारण उनका आग्रह रहा कि सर्वोदय समाज के आश्रमों में मैं स्थान-स्थान पर शिविर अवश्य लगाऊं, ताकि इस क्षेत्र में कार्य करने वाले जो निःस्वार्थ कार्यकर्ता हैं, उनकी आध्यात्मिक प्यास बुझे और लोक कल्याण के अपने पावन लक्ष्य में उन्हें नैतिक बल प्राप्त हो। मुझे इस समय इंदौर, जयपुर और वर्धा के सर्वोदय समाज की ओर से शिविर लगाने के लिए साग्रह आमंत्रण है, इसके अतिरिक्त द्वारको भाई का आग्रह है कि सर्वोदय आंदोलन वालों के प्रमुख कार्यकर्ताओं का एक शिविर मई महीने में 'उत्तर काशी' में लगाऊं। साथ ही बुद्ध जयंती के अवसर पर बैंगलोर में होने वाले उनके वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित होऊं और वहां धर्म प्रवचन का कार्यक्रम रखा जाए। मुझे यह प्रवचनों

वाली बात तो बहुत नहीं जँचती। यद्यपि इनसे नए साधकों में प्रेरणा अवश्य जागती है। परंतु कभी समय मिला तो इन सर्वोदय-वादियों (सर्वोदयी लोगों) के लिए शिविर लगाने की बात अवश्य जँचती है क्योंकि इससे सद्धर्म द्वारा लोक कल्याण का एक नया क्षेत्र खुलेगा। परंतु लंबे भविष्य की दीर्घसूत्रीय योजनाओं में मन लगाने के बजाय वर्तमान पर अधिक जोर दूं और जिन शिविरों का कार्यक्रम इस समय सिर पर है उन्हें भली-भांति संचालन कर लेने का बल संग्रह कर सकूं तो ही अच्छा है। पूज्य गुरुदेव और मां सयामा का धर्म-बल मेरे लिए अपूर्व पाथेय का काम करता है। यहां जो कुछ हो रहा है वह निश्चय ही मेरे बलबूते के बाहर है। पूज्य गुरुदेव का और उनकी परंपरा में पूज्य सया तैजी और लेडी सयाडो से लेकर महाकारुणिक भगवान बुद्ध तक के सभी आचार्यों का सम्मिलित धर्म-बल इस धर्म गंगा को भारत में पुनः प्रवहमान करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। बगहा अरण्य स्थली में लगे इस शिविर में मुझे धर्म के विशाल वटवृक्ष का बीज-वपन (बोया) हुआ नजर आता है। भारत आते ही मैंने स्थान-स्थान पर यही रुख अपनाया कि मैं भारत में बौद्धों की संख्या बढ़ाने के लिए नहीं आया हूं और न ही मेरा कोई ऐसा मिशन है। मेरी एक मात्र मनोकामना यही है कि लोग शील, समाधि और प्रज्ञा के इस पावन मार्ग का अनुसरण करना सीखें और फिर अपने आप को सनातनी, आर्य समाजी, सिख, जैन, मुस्लिम, इसाई आदि कुछ भी क्यों न कहें। सारा भारतवर्ष अपने आप को बौद्ध कहने लगे और उसका एक भी निवासी शील, समाधि और प्रज्ञावान न हो तो यह दुर्भाग्य की ही बात होगी, परंतु भारतवर्ष में बौद्ध कहलाने वाला एक भी व्यक्ति न हो और फिर भी देश के सारे निवासी शील, समाधि और प्रज्ञावान हों तो यह सौभाग्य की ही बात होगी और यही मेरे ध्येय की सफलतम परिणति होगी। मेरे ये विचार और इन विचारों के अनुरूप किया जाने वाला काम, इन सर्वोदय-वादियों की विचारधारा से बहुत मेल खाता है। देखें इनके शीर्षस्थ लोग इसे किस प्रकार अंगीकार करते हैं।

तुम्हारा अनुज,

सत्य नारायण गोयन्का

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्रीमती शशि अग्रवाल, इगतपुरी

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री अनंत नाइक, पालघर
2. श्री कृष्णन कन्नन, एवं
3. श्रीमती लक्ष्मी के. कन्नन, चेन्नई
4. श्री गजेंद्र शर्मा, बड़ोदरा
5. श्री प्रदीप वाघमारे, पुणे

बालशिविर शिक्षक

1. श्री उमेशचंद्र भूयान, कटक, उड़ीसा
2. श्रीमती जयश्री भूयान, कटक
3. श्री श्रीनिबास स्वैन, भुवनेश्वर
4. श्रीमती समिता स्वैन, भुवनेश्वर
5. श्री अमित सक्सेना, पुणे
6. श्रीमती प्रीति धांडे, पुणे
7. श्री मनीष मिनेयार, पुणे
8. श्री तेजस नीलकंठ पाटिल, पुणे
9. श्री वीरभद्र शंकर स्वामी, पुणे
10. श्रीमती महानंदा संतोष हिंगे, पुणे
11. श्रीमती ललिता प्र. बनसोड़े, भुसावल
12. श्री प्रकाश सुरेश बनसोड़े, भुसावल
13. सुश्री निर्मला उत्तम सोनवणे, भुसावल
14. श्रीमती संगीता अ. अदकमोल, भुसावल

दोहे धर्म के

बड़े भाग्य से मुक्ति का, पाया पंथ महान।
भव-भय व्याकुल जीव का, हुआ परम कल्याण॥

सब माटी की पुतलियां, मिलें राख या रेत।
साथ चले बस धरम ही, पुण्य लोक सुख हेत॥

धर्म जगे तो सुख जगे, दुःख उखड़ता जाय।
तृष्णा की तड़पन मिटे, तृप्ति सुधा रस पाय॥

प्रज्ञा शील समाधि ही, शुद्ध धर्म का सार।
काया वाणी चित्त के, सुधरें सब व्यवहार॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

सुख छावै संसार मँह, दुखिया रवै न कोय।
जन जन मन जागै धरम, जन जन सुखिया होय॥

दुखियारां रो दुख मिटै, भय त्यागै भयभीत।
बैर छोड़कर लोग सब, करै परस्पर प्रीत॥

अंधकार अग्यान रो, छायो जन मन भोत।
इब जागै सद्धरम री, विमळ ग्यान री जोत॥

धरम धरा स्यूं फिर बवै, सुद्ध धरम री धार।
एक बार फिर स्यूं हुवै, सकल जगत उद्धार॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2566, भाद्रपद पूर्णिमा, 10 सितंबर, 2022

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 25 AUGUST, 2022, DATE OF PUBLICATION: 10 SEPTEMBER, 2022

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086,
244144, 244440.
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org